R.K.
GROUP OF COLLEGE

Behind Kalwar Police Station, Kalwar, Jaipur (Raj.)

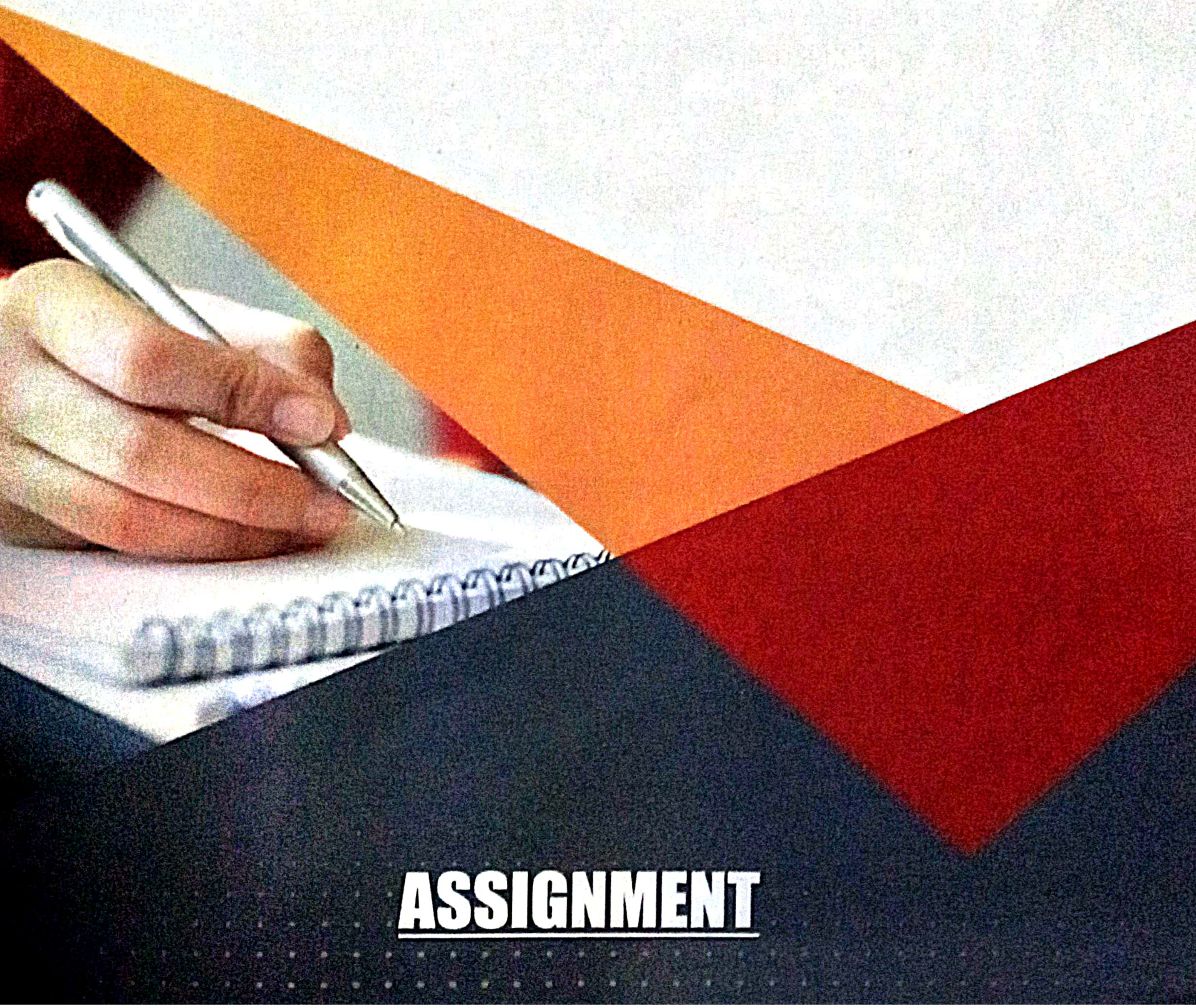

ASSIGNMENT

Ques 1. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम (F.H.F.M.) की व्याख्या कीजिए इसका क्या महत्व है?

Ans सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम का अर्थ → "आवश्यकता विशेष की समय विशेष पर पूर्ति की जा सकती है।" यह आवश्यकताओं की विभिन्न विशेषताओं में से एक विशेषता है, आवश्यकता की यह विशेषता ही उपभोग के इस महत्वपूर्ण 'सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम' का आधार है।

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम की परिभाषा → गॉसेन के अनुसार, "जैसे-जैसे किसी वस्तु का उपभोग बिना किसी बाधा के बढ़ता जाता है, उससे प्राप्त उपयोगिता निरन्तर गिरती चली जाती है, जब तक पूर्ण तुष्टि नहीं हो जाती है।" यह नियम उपभोग के क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति के दैनिक जीवन में लागू होता है।

उदाहरण → मान लीजिए किसी व्यक्ति (राम) को सन्तरों की आवश्यकता है। उसे सन्तरों की विभिन्न इकाइयों के उपभोग से जो उपयोगिता प्राप्त होती है उसे तालिका क्र. 1.1 द्वारा प्रदर्शित किया गया है:

तालिका - 1.1

सन्तरों के उपभोग से प्राप्त उपयोगिता

सन्तरों की इकाइयाँ	सीमान्त उपयोगिता
1	6
2	4
3	2
4	0
5	−2

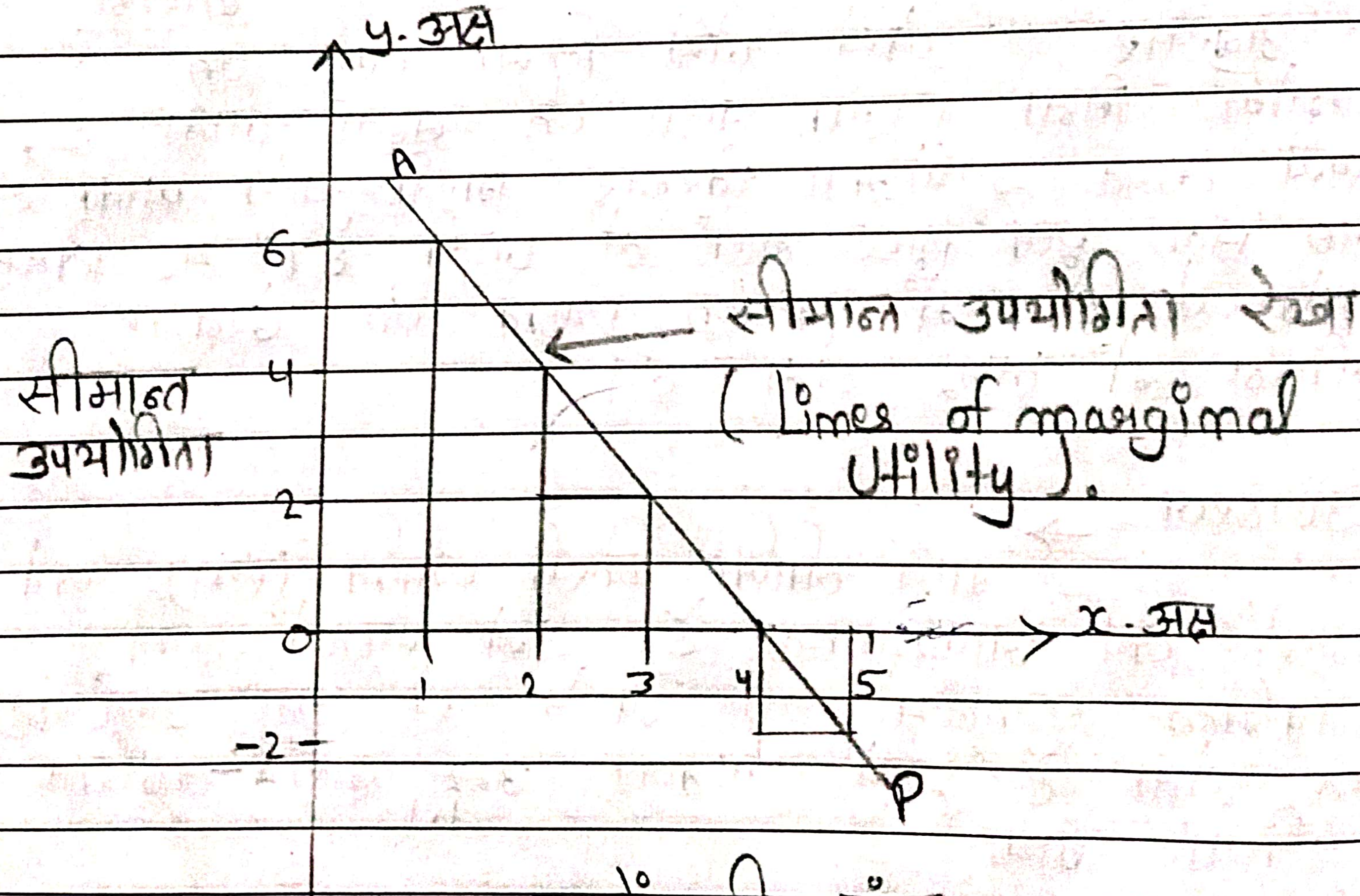

रेखाचित्र :- 1.1

स्पष्टीकरण → नियम को स्पष्ट करने के लिए तालिका 1.1 को चित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। रेखाचित्र 1.1 में OX अक्ष पर सन्तरों की संख्या तथा OY अक्ष पर सन्तरों की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता को दर्शाया गया है। सन्तरों की विभिन्न इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता बिन्दुओं को, जो इस रेखाचित्र पर अंकित किये गये हैं, मिलाने पर AP रेखा सीमान्त उपयोगिता की ह्रासमान प्रवृत्ति प्रकट करती है।

चौथी इकाई पर AP रेखा OX अक्ष को Z बिन्दु पर काटती है। इसका अर्थ यही है कि चौथी इकाई से शून्य सीमान्त उपयोगिता प्राप्त होती है। आगे AP रेखा ऋणात्मक हो जाती है, अर्थात् OX अक्ष के नीचे विपरीत दिशा में जाती है जो इस बात का द्योतक है कि चौथी इकाई के आगे उपभोग करने पर सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक हो जाती है।

*→ सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम (Importance of Law of Diminishing Marginal Utility) → सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम के महत्व निम्न प्रकार से स्पष्ट किये जा रहे हैं :-

सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का महत्व

- (1) सैद्धान्तिक महत्व
  - (i) माँग का नियम
  - (ii) सम-सीमान्त उपयोगिता नियम
  - (iii) उपभोक्ता की बचत
  - (iv) मूल्य सिद्धान्त
- (2) व्यावहारिक महत्व
  - (i) उत्पादन का आधार
  - (ii) सार्वजनिक वित्त में महत्व
  - (iii) समाजवादी पुनर्वितरण का आधार
  - (iv) उपयोगिता मूल्य व विनिमय मूल्य के अन्तर की व्याख्या

वर्णन (Explain) →

सैद्धान्तिक महत्व →

*(1) इस नियम का प्रयोग अर्थशास्त्र के अन्य नियमों को प्रतिपादित करने में किया गया है, यथा -

(i) माँग का नियम (Law of Demand) → इस नियम पर माँग का नियम आधारित है। एक उपभोक्ता किसी वस्तु की अधिक इकाइयों का उपभोग करता है, तो उसे कम उपयोगिता प्राप्त होती है। अतः उस वस्तु की अधिक इकाइयाँ कम मूल्य पर ही प्राप्त करना चाहेगा। इसके विपरीत अगर वह कम इकाइयों का उपभोग करता है तो उसे अधिक उपयोगिता मिलती है, अतः वह उसको अधिक मूल्य पर ही भी प्राप्त करने को तैयार होता है।

(ii) सम-सीमान्त उपयोगिता नियम (Law of Equi-marginal utility) → सम-सीमान्त उपयोगिता नियम भी इस नियम पर आधारित है। सम-सीमान्त उपयोगिता नियम के अनुसार एक उपभोक्ता अपनी आय से सभी अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त कर सकता

है, जब विभिन्न वस्तुओं पर किये गये व्यय की सीमान्त इकाइयों से प्राप्त उपयोगिता लगभग बराबर हो जाये।

(iii) उपभोक्ता की बचत (Consumer's surplus) → उपभोक्ता की बचत के विचार का आधार भी यही तथ्य है कि उपभोक्ता सभी इकाइयों के लिए प्रति इकाई मूल्य सीमान्त इकाई से प्राप्त उपयोगिता से अधिक नहीं दे सकता है उसे सीमान्त इकाई के पूर्व की इकाइयों से अपेक्षाकृत अधिक उपयोगिता प्राप्त होती है। इस प्रकार प्राप्त अतिरिक्त उपयोगिता उपभोक्ता की बचत होती है।

(iv) मूल्य सिद्धान्त (Price theory) → किसी वस्तु की पूर्ति अधिक होने पर उसकी सीमान्त उपयोगिता गिरती चली जाती है, अतः उसका विनिमय मूल्य भी गिरता जाता है। इस प्रकार यह नियम मूल्य सिद्धान्त का आधार है।

* (2) व्यावहारिक महत्व (Practical Importance) → इस नियम का व्यावहारिक जीवन में बड़ा भारी महत्व है, जैसे →

(i) उत्पादन का आधार (Basis of diversity in Production) → प्रो. टॉजिग के शब्दों में, "यह नियम उत्पादित वस्तुओं में बढ़ती हुई विविधता तथा उत्पादन और उपभोग में बढ़ती हुई जटिलता की व्याख्या करता है।"

(ii) सार्वजनिक वित्त में महत्व (Important in public finance) → सार्वजनिक वित्त की दृष्टि से भी इस नियम का भारी महत्व है। आधुनिक प्रगतिशील कर प्रणाली का आधार यही तथ्य है कि धन अधिक होने के कारण धन की सीमान्त उपयोगिता धनिकों के लिए कम होती है, इसलिए धनिकों पर अधिक कर लगाये जाते है।

(iii) धन के पुनर्वितरण के समाजवादी सिद्धान्त का आधार (Basis of socialist re-distribution theory) → इस सिद्धान्त के अनुसार धनिकों के लिए धन की सीमान्त उपयोगिता कम होती है, अतः उनसे धन लेकर निर्धन वर्ग को दिया जाना चाहिए, क्योंकि निर्धनों के लिए धन की उपयोगिता अधिक होती है।

(iv) उपयोगिता मूल्य और विनिमय मूल्य के अन्तर की व्याख्या (Explains difference between utility price and exchange price) → किसी वस्तु के उपयोगिता मूल्य एवं विनिमय मूल्य की व्याख्या करने में यह नियम सहायक है। डब्ल्यू. जे. बीमल के अनुसार हवा, पानी, धूप आदि की उपयोगिता हीरों, पन्नों, जवाहरात आदि की तुलना में अत्यधिक होती है, परन्तु विनिमय मूल्य बहुत कम; क्योंकि हवा, पानी आदि की पूर्ति अत्यधिक होने के कारण उनकी सीमान्त उपयोगिता बहुत कम होती है।

Ques 2. मांग पूर्वानुमान क्या है मांग पूर्वानुमान की विधियाँ क्या है मांग पूर्वानुमान का एक व्यवसायी के लिए क्या महत्व है?

Ans मांग पूर्वानुमान का अर्थ → मांग पूर्वानुमान का आशय भविष्य में किसी एक निश्चित अवधि के लिए सम्भावित मांग (बिक्री) की मात्रा एवं मूल्य का अनुमान लगाने से होता है। मांग पूर्वानुमान का उपयुक्त आशय इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि एक फर्म के लिए मांग का सही पूर्वानुमान अत्यन्त आवश्यक है।

* मांग पूर्वानुमान की विधियाँ (Methods of Demand forecasting) → मांग के ~~पूर्वनु~~ पूर्वानुमान की अनेक विधियाँ है, जो निम्न प्रकार से है:

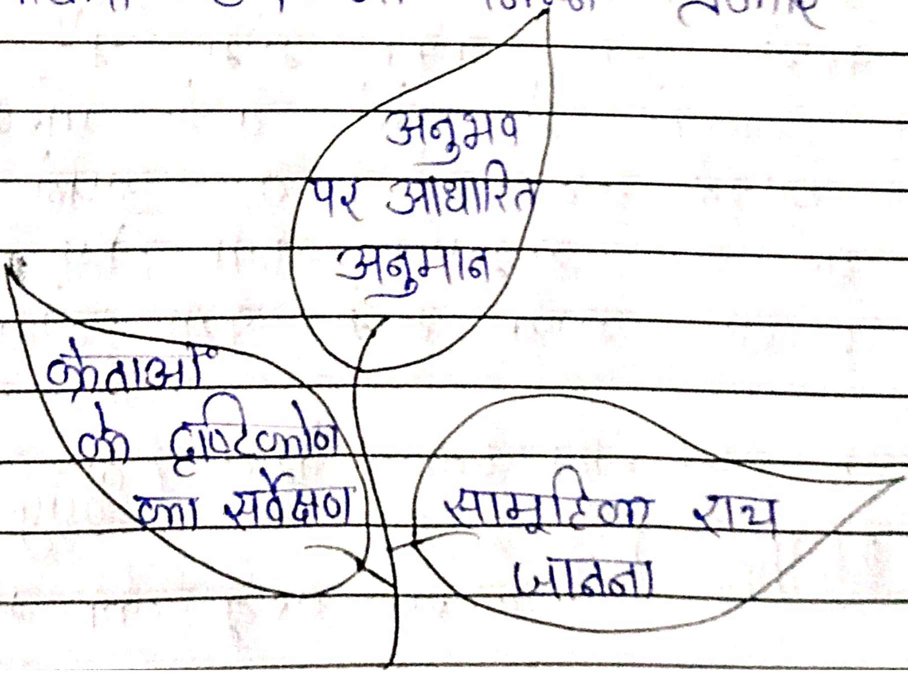

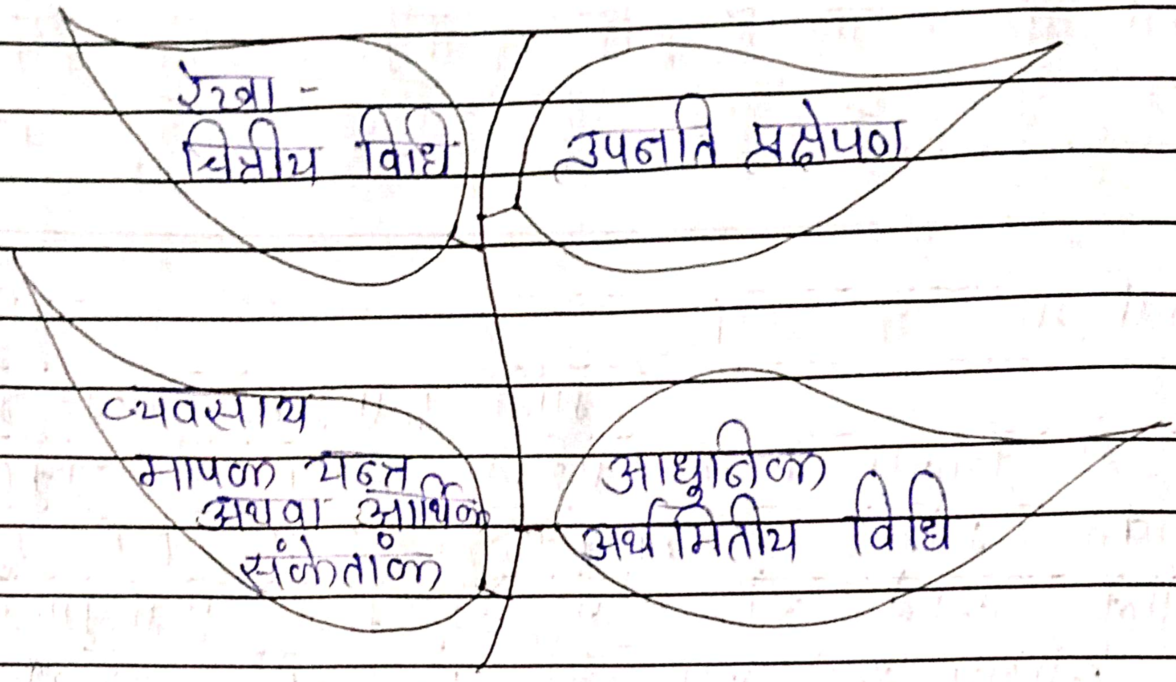

वर्णन →

(i) अनुभव पर आधारित अनुमान (Experience Based Conjecture) → किसी विशेष पद, उदाहरण के तौर पर विक्रय प्रबन्धक के पद पर, लम्बे समय से कार्य करते रहने से इतना अनुभव हो जाता है कि जिससे एक व्यक्ति माँग में परिवर्तन लाने वाले कारकों में होने वाले परिवर्तनों को निकट से जानने लगता है। वह अपने अनुभव के आधार पर यह अनुमान लगा लेता है कि उसकी वस्तु की भावी माँग क्या होगी।

(ii) क्रेताओं के दृष्टिकोण का सर्वेक्षण (Buyers Opinion Survey Method) → किसी वस्तु की माँग के

अल्पकालीन पूर्वानुमान लगाने की सबसे सरल विधि क्रेताओं के दृष्टिकोण का सर्वेक्षण करना है। इस विधि में वस्तु के क्रेताओं के पास जाकर उनसे पूछा जाता है कि भविष्य में वे वस्तु विशेष को कितनी मात्रा में माँगेंगे। क्रेताओं द्वारा बताई गई मात्रा का योग कर लिया जाता है, तथा यही वस्तु की माँग का पूर्वानुमान होता है।

(iii) सामूहिक राय जानना (To Know Collective Opinion) ⇒ इस विधि में वस्तु के विक्रय से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों की राय जानकर उसके आधार पर वस्तु की माँग का पूर्वानुमान लगाया जाता है। इस विधि में सेल्समैन अपने - अपने क्षेत्र अथवा विभागों के बिक्री के पूर्वानुमान लगाते हैं तथा उन्हें क्षेत्रीय प्रबन्धक अथवा विक्रय प्रबन्धक को भेजते हैं। इन पूर्वानुमानों का औचित्य यह है कि सेल्समैन ग्राहकों के अधिक से अधिक निकट होते हैं।

(iv) रेखा - चित्रीय विधि (Graphical Method) :⇒ किसी के अनुभव को सुव्यवस्थित करने की सबसे सरल विधि किसी ग्राफ पेपर पर पिछले समंकों को समय को एक स्वतन्त्र चर तथा माँग की मात्रा को निर्भर चर मानते हुए अंकित करने की है।

तालिका - 1.2 बैंक साख की माँग (करोड़ रुपयों में)

वर्ष	बैंक साख	वर्ष	बैंक साख
1995 - 1996	2188	2000 - 2001	4684
1996 - 1997	2756	2001 - 2002	5263
1997 - 1998	3098	2002 - 2003	6115
1998 - 1999	3487	2003 - 2004	7399
1999 - 2000	3971	2004 - 2005	8376

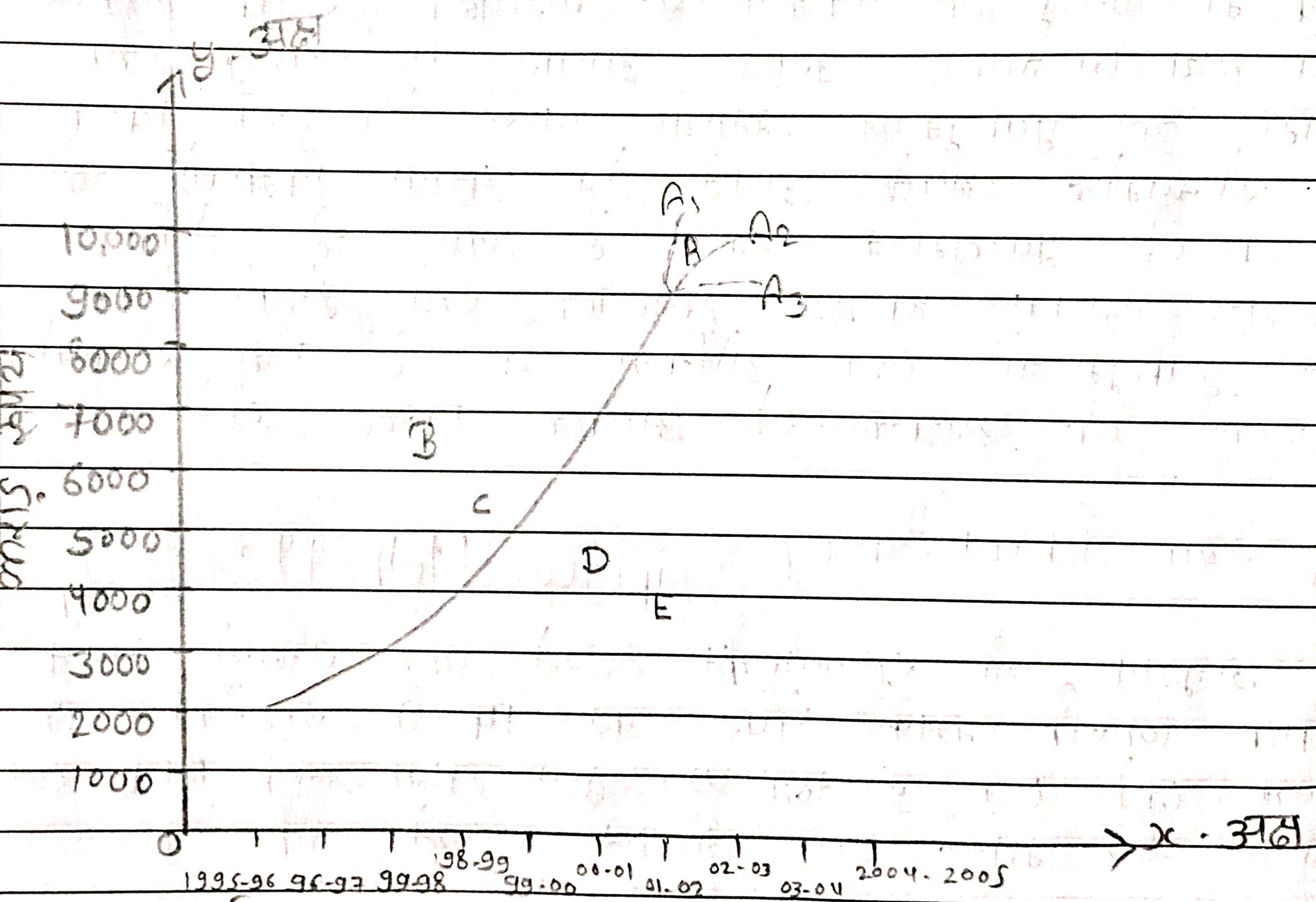

वर्ष →

रेखाचित्र - 1.2

स्पष्टीकरण → रेखाचित्र 1.2 में OY-अक्ष पर बैंक साख तथा OX-अक्ष पर अवधि अंकित की गई है। ग्राफ 2004-05 तक अंकित है तथा आगे विस्तार चाहता है। यदि 2004-05 के आगे बैंक साख की माँग का अनुमान करना हो तो यह विस्तार कई तरह से किया जा सकता है। कुछ विस्तार ग्राफ पर कटी हुई रेखा द्वारा दिखाये गये हैं। यह विधि पूर्णतः व्यक्तिपरक है।

(v) उपनति प्रक्षेपण (Trend Projection or Trend Analysis) → भूतकालीन अनुभवों को रेखाचित्र विधि द्वारा सुव्यवस्थित करने के प्रयत्न अधिक व्यवस्थित नहीं हैं, क्योंकि ग्राफ में अवलोकित समंकों से बनी रेखा के विस्तार की अवस्था में अस्पष्टता अथवा संदिग्धता रहती है।

उपनति ज्ञात करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जा सकता है, जिनमें से रेखा-चित्रीय विधि के अतिरिक्त निम्न मुख्य हैं:

(A) अर्द्ध-माध्य विधि (The semi-average method).
(B) चल-माध्य विधि (The moving average method).
(C) गणितीय फलन विधि (The mathematical function method).

→ इनमें गणितीय फलन विधि अच्छी मानी जाती है, परन्तु यह विधि अधिक जटिल होती है। अनेक सरल गणितीय फलन उपलब्ध है जिनमें सबसे सुगम सरल रेखा फलन (Straight line function) $Y = a + bx$ है, जिनमें x समय अवधि स्वतन्त्र चर है तथा y वस्तु की माँग निर्भर चर है। a तथा b को मूल्य न्यूनतम वर्ग विधि द्वारा ज्ञात कर लिया जाता है, जिसे आगे स्पष्ट किया जा रहा है। इस सरल रेखीय फलन के अतिरिक्त असरल रेखीय फलन (Non-linear function) भी उपलब्ध है, जिनमें से कुछ निम्न होते है :-

$Y = a + bx + cx^2$ ---- पैराबोलिक (Parabolic).

$Y = a + bX + cX^2 + dX^3$ क्यूबिक (Cubic).

$Y = a + bX$ ---- rX^n पॉलीनोमियल (Polynomial).

(vi) व्यवसाय - मापक यन्त्र अथवा आर्थिक संकेतांक (Business Barometers or Economics Indicators) → व्यावसायिक क्रियाओं के अध्ययन तथा विश्लेषण के लिए व्यवसाय सूचकांकों (Business indices) अथवा आर्थिक संकेतांकों (Economic indicators) की

रचना की जाती है। इन सूचकांकों अथवा संकेतांकों की सहायता से भावी व्यावसायिक प्रवृत्तियों तथा उच्चावचनों का यथोचित ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

(vii) आधुनिक अर्थमितीय विधि (Modern Econometric Methods) → वैज्ञानिक माँग पूर्वानुमान के क्षेत्र में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद में अर्थमिती (econometric) की विधियों का अधिक प्रयोग होने लगा है।

Ques3. राष्ट्रीय आय को परिभाषित करते हुए राष्ट्रीय आय का आर्थिक कल्याण में संबंध बताइए ?

Ans राष्ट्रीय आय का अर्थ → राष्ट्रीय आय की धारणा अर्थशास्त्र में एक महत्वपूर्ण धारणा है, जो सभी बड़ी आर्थिक समस्याओं के विश्लेषण में सहायक होती है।

राष्ट्रीय आय की परिभाषा → मार्शल के अनुसार,
" किसी देश का श्रम एवं पूंजी देश के प्राकृतिक साधनों पर क्रियाशील होकर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं और सभी प्रकार की सेवाओं का निश्चित, विशुद्ध योग उत्पन्न करते हैं।"

*→ राष्ट्रीय आय व आर्थिक कल्याण में संबंध → राष्ट्रीय आय व आर्थिक कल्याण दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध की व्याख्या करने के लिए यह आवश्यक है, कि राष्ट्रीय आय के अर्थ के साथ आर्थिक कल्याण का अर्थ भी जान लिया जाये।

→ राष्ट्रीय आय व आर्थिक कल्याण में घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण राष्ट्रीय आय में होने वाले परिवर्तन आर्थिक कल्याण को भी प्रभावित करते हैं। राष्ट्रीय आय के परिवर्तन के आर्थिक कल्याण पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन दो शीर्षकों में कर सकते हैं:

I राष्ट्रीय आय के आकार या परिमाण में परिवर्तन के आर्थिक कल्याण पर प्रभाव।

II राष्ट्रीय आय के वितरण में परिवर्तन का आर्थिक कल्याण ~~प~~ पर प्रभाव।

I राष्ट्रीय आय के आकार या परिमाण में परिवर्तन के आर्थिक कल्याण पर प्रभाव

राष्ट्रीय आय के आकार में परिवर्तन दो प्रकार के हो सकते हैं: i. राष्ट्रीय आय में वृद्धि, अथवा ii. राष्ट्रीय आय में कमी। सामान्यतया: राष्ट्रीय आय में कमी होने से आर्थिक कल्याण में कमी होती है तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि होने से आर्थिक कल्याण में भी वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय आय तथा आर्थिक कल्याण में प्रत्यक्ष सम्बन्ध देखने को मिलता है, परन्तु यह सदैव सही नहीं होता है। इसके कुछ प्रमुख अपवाद निम्नलिखित हैं:

1. राष्ट्रीय आय में वृद्धि एवं निर्धनों की आय में कमी।
2. लोगों की रुचियों में परिवर्तन।
3. राष्ट्रीय आय में वृद्धि का ढंग।
4. जनसंख्या वृद्धि की दर राष्ट्रीय आय वृद्धि की दर से अधिक।
5. गैर - उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि।

वर्णन →

1. राष्ट्रीय आय में वृद्धि एवं निर्धनों की आय में कमी → यदि राष्ट्रीय आय की वृद्धि के साथ - साथ निर्धनों को मिलने वाली आय में कमी हो जाती है, तो आर्थिक कल्याण में वृद्धि के स्थान पर कमी हो सकती है।

2. लोगों की रुचियों में परिवर्तन → यदि राष्ट्रीय आय की वृद्धि के साथ - साथ लोगों के

उपभोग अथवा रुचियों में परिवर्तन बुराइयों की तरफ होते हैं, तो आर्थिक कल्याण में कमी होती है।

3. राष्ट्रीय आय में वृद्धि का ढंग → राष्ट्रीय आय में वृद्धि यदि लोगों के आराम को कम करके, अधिक घंटे काम करके, खराब दशाओं के अन्तर्गत कार्य करके अथवा औरतों व बच्चों के शोषण से होती है, तो इससे कल्याण में कमी हो जायेगी।

4. जनसंख्या वृद्धि की दर राष्ट्रीय आय वृद्धि की दर से अधिक → यदि राष्ट्रीय आय में वृद्धि जनसंख्या वृद्धि से कम होती है, तो प्रति व्यक्ति आय कम होने से आर्थिक कल्याण में भी कमी हो जायेगी, अर्थात राष्ट्रीय आय तो बढ़ती है, परन्तु जनसंख्या वृद्धि के कारण प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में पहले की तुलना में कम मुद्रा प्राप्त होती है।

5. गैर-उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में वृद्धि → यदि समाज में गैर-उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में

वृद्धि होती है, तथा उपभोग्य वस्तुओं के उत्पादन में कमी होती है, तो सकल राष्ट्रीय आय बढ़ने पर भी आर्थिक कल्याण बढ़ने के स्थान पर घट जाता है।

III. राष्ट्रीय आय के वितरण में परिवर्तन का आर्थिक कल्याण पर प्रभाव → राष्ट्रीय आय के वितरण में परिवर्तन का तात्पर्य यह होता है, कि राष्ट्रीय आय के एक भाग का हस्तान्तरण, समाज के एक वर्ग से दूसरे वर्ग को हो सकता है। ये परिवर्तन दो प्रकार से हो सकते हैं:-

1. धनी वर्ग से निर्धन वर्ग की तरफ आय का हस्तान्तरण।
2. निर्धन वर्ग से धनी वर्ग की तरफ आय का हस्तान्तरण।

1. धनी वर्ग से निर्धन वर्ग की तरफ आय का हस्तान्तरण → सामान्यतया धनी वर्ग से आय का हस्तान्तरण निर्धन वर्ग को होने पर वितरण की असमानताएँ कम होती हैं, तथा

आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है। इसके पक्ष में निम्न तर्क दिये जा सकते हैं:

(i) उपभोग पर अधिक व्यय।

(ii) धनिकों के द्वारा कम त्याग व निर्धनों को अधिक उपयोगिता।

(iii) तुलनात्मक स्थिति का समान रहना।

2. निर्धन वर्ग से धनी वर्ग की तरफ आय का हस्तान्तरण → जब आय का हस्तान्तरण निर्धन वर्ग से धनी वर्ग की तरफ होता है, तब समाज में आर्थिक विषमताएँ बढ़ती हैं तथा निर्धन वर्ग अपनी अत्यावश्यक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि से भी वंचित रहता है, अतः समाज के आर्थिक कल्याण में कमी होती है।

निष्कर्ष → निष्कर्ष के रूप में हम यह कह सकते हैं कि समाज में आय का पुनर्वितरण धनी वर्ग से निर्धन वर्ग की ओर होना चाहिए उसके साथ-साथ इस बात की

व्यवस्था होनी चाहिए, कि निर्धन वर्ग के लोग अपनी आय को दुर्व्यसनों में व्यय न करके अच्छे कार्यों में व्यय करें। ऐसा होने पर जनता के आर्थिक कल्याण में वृद्धि होगी।